रजि० नं० बी ४४४८

मतदाताओंके नाम अपील

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ | सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला | सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी | अंक ४३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २२ दिसम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

खुलासा

यह देखकर अचरज होता है कि कओी पाठकोंने विनोबाके और मेरे बारेमें यह समझ लिया है कि पार्टीके नामके बनिस्बत प्रत्येक अुम्मीदवारके निजी गुणों और योग्यता पर जोर देकर हम यह सुझाना चाहते हैं कि सिर्फ अच्छे 'स्वतंत्र' अुम्मीदवारको ही वोट देना चाहिये, किसी पार्टीकी तरफसे खड़े होनेवाले अुम्मीदवारको नहीं — भले वह योग्य और अीमानदार ही क्यों न हो। यह हमारे विचारोंका और मेरी समझसे सर्व-सेवा-संघके प्रस्तावका भी बिलकुल गलत अर्थ है। अेक विशेष अुदाहरण देकर मैं अिसे स्पष्ट कर देना चाहता हूं: यहां वर्धाके मेरे चुनाव-क्षेत्रमें कांग्रेसने श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालको पार्लमेण्टके लिअे और श्री शान्ताबाओी नारूलकरको मध्यप्रदेशकी धारासभाके लिअे खड़ा किया है। अूपरकी कसौटीसे जांचते हुअे मैं अिन दोनोंको हर तरहसे योग्य अुम्मीदवार मानता हूं और अिसलिअे अुनके सम्बन्धमें कांग्रेसका समर्थन करनेमें मुझे कोओी हिचकिचाहट नहीं है। प्रत्येक अुम्मीदवारके निजी गुणों और योग्यता पर हम अिसलिअे जोर देते हैं कि हरअेक पार्टी हर जगहके लिअे अैसे लोगोंको खड़ा करनेकी जरूरतको समझे, जिनके चरित्र और योग्यताके बारेमें किसीको शंका न हो।

मैं जानता हूं कि अल्पमतवाला भला प्रतिनिधि देशके शासनमें कोओी खास आवाज नहीं रख सकेगा। लेकिन अेक भला और अीमानदार आदमी हमेशा भली और सच्ची सलाह देगा; और बहुमतवाली पार्टी भी भले विरोधीके विचारोंकी पूर्ण अुपेक्षा नहीं कर सकती। किसी स्वार्थी आदमीको प्रभावकी जगहसे दूर रखकर वह देशकी भी सेवा करता है।

अिसलिअे जो मतदाता किसी खास राजनीतिक पार्टीके सदस्य नहीं हैं, अुन्हें भले आदमियोंको चुनना चाहिये, न कि सिर्फ किसी पार्टीके नाम या लेबलको। अलबत्ता, मैं फिर कहूंगा कि साम्प्रदायिक और हिंसक विचारोंवाले अुम्मीदवारोंको वोट नहीं देना चाहिये, भले वे किसी पार्टीसे सम्बन्ध रखते हों या स्वतंत्र हों और व्यक्तिगत रूपसे अूंचे चरित्रके लिअे प्रसिद्ध हों।

वर्धा, १७-१२-'५१ — कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक : किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-४-० | डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

सवाल-जवाब

मंत्री और चुनाव

सवाल — सरकारी कर्मचारियोंको राजनीतिक कार्योंमें भाग लेनेकी मनाही है। मंत्रियोंको सरकारी वेतन मिलता है, तो क्या मंत्री सरकारी कर्मचारी नहीं हैं? यदि अैसा है, तो फिर वे राजनीतिक प्रचारका काम कैसे कर सकते हैं? क्या यह जरूरी नहीं है कि वे लोग पहले अपना पद छोड़ दें और फिर चुनावके लिअे खड़े हों या प्रचारका काम करें?

जवाब — मंत्री सरकारी कर्मचारियोंकी श्रेणीमें नहीं आते। वे अुन पदों पर जनताके चुने हुअे प्रतिनिधियोंकी हैसियतसे काम करते हैं। अुन्हें जो पैसा मिलता है, वह अुनका वेतन या अुनकी सेवाओंका पारिश्रमिक नहीं है; वह तो अुन्हें अिसलिअे दिया जाता है कि अपनी जीविकाके लिअे कोओी दूसरा काम किये बिना ही वे पदका सारा अुत्तरदायित्व योग्यतापूर्वक निभा सकें। प्रेसीडेंट और धारासभाअें अुन्हें अुनके पदसे बिना नोटिस दिये अलग कर सकती हैं। चुनावके अवसर पर जनता भी अुन्हें अिसी तरह अलग कर सकती है। यह सारी व्यवस्था हमारे संविधानके अनुसार हुओी है, और जनतंत्रवादी देशोंकी मानी हुओी पद्धति भी यही है। मंत्रित्वके पद पर रहते हुअे भी वे अपने-अपने राजनीतिक दलके सदस्य, नेता, या कार्यकर्ता बराबर बने रहते हैं। अैसा नहीं होता कि मंत्रित्वके कार्यकालमें वे अपने पक्षके सदस्य, नेता या कार्यकर्ता न रहें। पण्डित नेहरूके कांग्रेस-अध्यक्ष होनेमें कोओी रुकावट नहीं है, यद्यपि वे प्रधानमंत्री हैं। लेकिन अुनका मुख्य सचिव (चीफ सेक्रेटरी) कांग्रेसका प्राथमिक सदस्य भी नहीं हो सकता। 'सरकारी कर्मचारियों' की अिन दो श्रेणियोंका यह फर्क है। मंत्रियोंके लिअे चुनाव अुनके दलके संघटनके कामका अेक अंग है।

राजनीतिक या चुनाव प्रचारके काममें भाग लेनेसे पहले अुन्हें अपने पदसे अिस्तीफा दे देना चाहिये, अिस सूचनामें गलत-समझी है। अिसका अर्थ यह होगा कि कुछ समय तक देशमें कोओी सरकार ही नहीं रहेगी। हमारे विधानके अनुसार राष्ट्रपतिको मंत्रियोंके बिना शासन करनेका अधिकार नहीं है। तब मंत्रियोंके न रहनेकी अवस्थामें, सरकारके नाम पर आदेश जारी करनेके लिअे कोओी नहीं होगा।

बेशक, हम अैसा विधान बना सकते हैं, जिसमें राष्ट्रपतिको मंत्रियोंके न रहने पर शासनका अधिकार रहे। लेकिन अुस अवस्थामें, अगर राष्ट्रपतिका निर्वाचन चुनावके द्वारा होता है, तो यही सवाल खड़ा होगा। यानी अुसके चुनावके समय शासन-सूत्र अुसीके हाथमें रहेगा। और अगर वह निर्वाचित राष्ट्रपति नहीं है, और मंत्रियोंके

www.vinoba.in

बिना शासन कर सकता है, तो सरकारका स्वरूप जनतंत्रात्मक नहीं होगा।

समाजके हरअेक काममें आखिर अंजाममें बड़ी हद तक किसी न किसीका विश्वास करनेकी आवश्यकता होती है। अगर हम नेताओंको प्रामाणिक नहीं मानते, तो जनतंत्रात्मक सरकार संभव नहीं है। सत्ताके दुरुपयोगके खिलाफ अेक ही अुपाय हो सकता है — हम सामाजिक चरित्रका दर्जा अूपर अुठायें। नियमों और नियंत्रणोंकी अूंची दीवालें खड़ी करनेसे यह काम नहीं हो सकता।

मतदाताओंकी सूचियां

स० — मतदाताओंकी सूचियां बहुत असावधानीसे बनायी गअी हैं, और अुनमें बड़ी त्रुटियां रह गअी हैं। अिसकी वजहसे अैन मौके पर अैसी कठिनाअियां अुपस्थित हो जाती हैं, जिनकी पहलेसे कोअी कल्पना नहीं की जा सकती। क्या यह अुचित है कि सरकार अिन अशुद्ध सूचियोंके आधार पर चुनाव चलाये?

ज० — सूचियोंमें रह गयी भूलोंकी सारी जिम्मेदारी सरकार पर नहीं डालनी चाहिये। सरकारके साथ-साथ मतदाताका भी यह कर्तव्य है कि वह समय रहते, चुनावके पहले ही अिस बातकी जांच कर ले कि अुसका नाम ठीक दर्ज हुआ है या नहीं। जब करोड़ों मतदाताओंकी सूचियां बनती हैं, तो अुसमें भूलें रह जाना आश्चर्यकी बात नहीं। देखना यह चाहिये कि भूलोंकी प्रतिशत संख्या कितनी है। सरकारको यह काम अैसे क्लर्कोंसे करवाना पड़ता है, जिन्हें अिस तरहके कामका कोअी पुराना अनुभव नहीं होता, जिनकी समझ-शक्ति मर्यादित होती है, और जिस विदेशी भाषामें यह काम किया जाता है, अुसमें अुनकी योग्यता अकसर बहुत कम होती है। मतदाताओंका ज्ञान तो और भी कम होता है, और ज्ञान हो भी तो वे सूची तैयार करनेवाले क्लर्कोंकी मदद नहीं करते। अिस तरह क्लर्कोंके लिअे यह काम अेक बेलज्जत बोझ हो जाता है। गलतियोंके लिअे सरकार और सरकारी कर्मचारी निन्दा और आलोचनाके बजाय दयापात्र ही विशेष हैं। यह भी याद रखना चाहिये कि सारी दुनियामें अितना बड़ा यह पहला ही चुनाव है; और हमारे जैसे देशमें, जहां जनता अितनी अशिक्षित है, अेक बिलकुल नयी सरकारने अिस बड़े कामको करनेका साहस दिखाया, अिसलिअे हमें अुन्हें अुनके साहस पर बधाअी देनी चाहिये। मैं समझता हूं कि गलतियोंके सुधारके लिअे सरकारने कुछ अैसी सुविधाअें की हैं, जिनसे अखीर अखीर तक यह काम हो सकता है। हो सकता है कि अनुभवसे यह विचार आये कि अिस प्रत्यक्ष चुनावकी जगह अप्रत्यक्ष चुनाव बेहतर है; अप्रत्यक्ष चुनावमें अुसके अपने दोष रहेंगे, लेकिन वह शायद कम खर्चीला तो होगा।

वर्धा, ५-१२-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

सरदार पटेलके भाषण

संपादक: नरहरि परीख, अुत्तमचन्द शाह
अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ५-०-० डाकखर्च ०-१३-०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]
लेखक : नरहरि परीख
अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६-०-० डाकखर्च १-३-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

१०

[वाविळापल्लीमें ता० २१-४-'५१ को प्रार्थनाके बाद दिया हुआ भाषण।]

अुस दिन पुलिस गांवमें से चार आदमियोंको पकड़कर ले गअी थी। अुसका अुल्लेख करते हुअे प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने कहा:

पुलिसवाले अपना कर्तव्य करते हैं। आप लोगोंको यह ध्यानमें रखना चाहिये कि पुलिस आपकी मददके लिअे है, आपको तकलीफ देनेके लिअे नहीं। जो लोग गिरफ्तार हुअे हैं, अुन लोगोंने कम्युनिस्टोंको मदद दी होगी तो कम्युनिस्टोंके भयसे दी होगी या अुनके साथ सहानुभूति रखनेके कारण दी होगी। यह कोअी न समझे कि ये लोग जो पकड़े गये हैं, सारेके सारे गुनहगार होंगे। वे अगर बिना डरके जो कुछ हुआ है, पुलिसवालोंको सुनायेंगे तो मैं अुम्मीद करता हूं कि अुन्हें भी कोअी तकलीफ नहीं होगी।

निर्भय बनिये

आज अेक नौजवान मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने अेक सवाल पूछा कि कम्युनिस्ट आते हैं, हमको धमकाते हैं। हम अुन्हें खाना खिलाते हैं, तो पुलिस हमें डराती है। अगर हम कम्युनिस्टोंको खाना नहीं खिलाते हैं, तो वे मार डालनेका भय बताते हैं। अिस तरह रातमें कम्युनिस्टोंसे तकलीफ होती है, दिनमें पुलिसवालोंसे। अैसी सूरतमें हमें क्या करना चाहिये?

मैंने कहा कि आप लोगोंको निर्भय बनानेके लिअे ही मैं आया हूं। अगर कोअी जबरदस्तीसे आपके घरमें घुसकर खाना मांगता है, तो अुसको खिलानेकी जिम्मेदारी आप पर नहीं है। अुन्होंने कहा कि जिम्मेदारी तो हम पर नहीं है, लेकिन वे हमको मार डालेंगे तो हम क्या करेंगे? मैंने अुनको समझाया कि परमेश्वरने जिसका मरण आज लिख रखा है, अुसका मरण कभी टलनेवाला नहीं है। और अुसने अगर हमारा मरण आज नहीं लिखा है, तो कोअी कम्युनिस्ट हमको मार सकनेवाले नहीं। तो आप लोगोंको मरणका डर छोड़ना चाहिये। जो लोग मरनेसे डरते हैं, वे जिन्दा नहीं हैं, लेकिन मर चुके हैं। आप समझते हैं कि हममें से कोअी यहां रहनेवाला नहीं है, सारेके सारे जानेवाले हैं। जब परमेश्वरका बुलावा आता है, तो हरअेकको जाना ही पड़ता है। अिसलिअे कोअी बन्दूक लेकर हमारे सामने आयेगा, तो अुसके सामने छाती खुली करनेकी हिम्मत हममें होनी चाहिये। वह यदि मारनेके लिअे आयेगा और अगर वह भी हमारा भाअी होगा, तो अुस पर हमारे मनमें दया होनी चाहिये। और अुसके सामने शांतिसे खड़े हो जाना चाहिये। अेवं कहना चाहिये कि भाअी, जबरदस्तीसे कोअी चीज मांगते हो तो हम देनेवाले नहीं हैं। हमें कत्ल करके जो लेना हो, वह ले जाओ। जब हम लोग अिस दुनियाको छोड़ कर जाते हैं, तो यहांका सारा सरंजाम साथ लेकर नहीं जाते हैं। यह जो निर्भयताकी शक्ति है, खूनी लोगोंका सामना करनेकी शक्ति है, वह शक्ति हम लोगोंमें होनी चाहिये।

प्रह्लादका अुदाहरण

आपने प्रह्लादका चरित्र सुना है। वह छोटा-सा बच्चा था, लेकिन अुसने हिरण्यकश्यपुका सामना किया। अेक छोटा-सा बच्चा भी अगर यह समझे कि यह जो देह है वह मेरा रूप नहीं है, मैं तो परमेश्वरकी ज्योति हूं और यह अेक चोला पहना है, तो वह भी निर्भय हो सकता है। अगर वह यह समझे कि हम तो परमेश्वरकी ज्योति हैं और यह शरीर अूपर-अूपरका हमारा अेक कपड़ा है, हम परमेश्वरके प्रकाशमात्र हैं, तो हिम्मत आ जायगी। लोग मानते हैं कि हाथमें बंदूक आनेसे हिम्मत आती है, लेकिन यह बिलकुल गलत खयाल है।

www.vinoba.in

कम्युनिस्टोंका तरीका

यही देखो न कि कम्युनिस्टोंने विचार किया कि गरीब लोगोंकी सेवा करें। अुनका विचार तो अच्छा है, लेकिन अुन्होंने जो तरीका अख्तियार किया है, अुससे किसानोंका कोअी लाभ नहीं हो रहा है, बल्कि किसान भयभीत हो गये हैं। गांधीजी हम लोगोंमें आये और अुन्होंने हमकों हिम्मत दी, वह आप लोगोंने देखा। अंग्रेजोंने हमारे हाथसे शस्त्र छीन लिये थे, तो गांधीजीने कहा कि हमें शस्त्रोंकी कोअी दरकार नहीं। और सत्याग्रहकी लड़ाअीमें जहां तक लोगोंने देखा, स्त्रियोंने — जो कभी घरसे बाहर नहीं निकली थीं — भी अपनी जान खतरेमें डाली और हिन्दुस्तानने अैसा दृश्य देखा कि हजारों स्त्रियां बाहर आ गअीं। मतलब अुसका यह हुआ कि शस्त्रकी ताकत कोअी ताकत नहीं है, आत्माकी ताकत ही सच्ची ताकत है। लेकिन कम्युनिस्टोंका अभी तक आत्माकी निष्ठा पर विश्वास नहीं बैठा, वे शस्त्र पर ही भरोसा रखे हुअे हैं। अगर वे शस्त्र पर भरोसा रखते हैं, तो वे देखेंगे कि हिन्दुस्तानके लोग अुनके बारेमें कोअी सहानुभूति नहीं रखते। लेकिन अगर वे शस्त्रका विश्वास छोड़ दें और आत्मशक्ति पर विश्वास रखें, तो वे देखेंगे कि मैं भी अुनके पक्षमें दाखिल होता हूं। फिर मैं कहूंगा कि मैं भी अेक कम्युनिस्ट हूं और तुम भी कम्युनिस्ट हो। तो दोनों मिलकर हिन्दुस्तानकी सेवा करेंगे। लेकिन अुन लोगोंका तरीका अभी तक यह रहा कि वे अेक-अेक गांवमें फूट डालते हैं और मेरा तरीका यह होगा कि सारे गांवको मैं अेक बनाअूंगा। वे अेक ही गांवमें अेक घरवालेको दूसरे घरवालेके साथ लड़ायेंगे, मैं सब गांववालोंको अेक करूंगा।

विनोबाका तरीका

अभी देखिये मैं अेक छोटे गांवमें हो आया। अुस गांवको लूटकर आया हूं। अुस गांवमें ५० अेकड़ जमीन अेक श्रीमान् भाअीसे गरीबोंको दिलवाअी। अुसके पहले भी ८ गांवोंमें अिसी तरह १०० अेकड़, ७५ अेकड़ जमीन लोगोंसे ली और गरीबोंको दिलवाअी। आज आपके गांवको भी कुछ लूटनेवाला हूं। लेकिन ये कम्युनिस्ट लोग कहेंगे कि जिसके पास ५-५ हजार अेकड़ जमीन होती है, वह सौ अेकड़ जमीन देता है तो अुससे क्या होगा? तो मैं कहता हूं कि जरा धीरज रखो, अभी ५ हजारमें से जो सौ देता है, वह प्रेमसे देता है तो मैं लूंगा और बाकीके ४ हजार नौ सौ अेकड़ भी मेरे ही हैं। जब ये लोग देखेंगे कि हम जमीन देते जाते हैं — गरीबोंको, अुससे गरीबोंका प्रेम ही हमको मिलता है, तो फिर वे खुद कहेंगे कि और भी ले लो।

तो फिर कम्युनिस्ट हमको कहेंगे कि कैसा भोला मनुष्य है। लेकिन अुनको मैं कहूंगा कि भोला मैं नहीं हूं, मेरा धंधा मैं जानता हूं। अेक दफा थोड़ी भावना, थोड़ा वातावरण बनने दो कि जमीन गरीबोंको देनेमें लाभ है; फिर अेक दफा वातावरण तैयार हो जायगा तो कानून मैं करा लूंगा। फिर राह नहीं देखनेवाला कि आज सौ अेकड़ है, पांच सालके बाद और १०० अेकड़ मिलेगी, और फिर पांच सालके बाद शेष १०० अेकड़ मिलेगी। अैसे चार हजार मिलनेमें तो सौ बरस चले जायंगे। बात अैसी है कि हवा बदल जानी चाहिये। और हवा बदल जाती है तो कानून अुसके साथ आता ही है। परन्तु मैं वातावरण तैयार करूं, तो कानूनको लोग पसन्द करेंगे। बाप अैसा ही तो करता है। बच्चेको मिठाअी खिलाता है, लेकिन मिठाअी देता है तो वह प्रेमसे देता है और तमाचा लगाता है तो प्रेमसे लगाता है। और जो कोअी लूटनेके लिअे आते हैं, वे बच्चेको मिठाअी खिलाते तो हैं, पर वह प्रेमकी मिठाअी नहीं होती। लेकिन माता जो तमाचा लगाती है, वह प्रेमका होता है। मैं जो जमीन लेता हूं, वह प्रेमसे लेता हूं।

www.vinoba.in

अीश्वर और गांधीजीकी करामात

मुझे आश्चर्य लगता है कि जहां मैं जाता हूं, वहां लोग जमीन देनेके लिअे क्यों तैयार होते हैं? मैं सोचता हूं कि क्या वह गांधीजीकी करामात है? लोग जानते हैं कि यह गांधीजीका मनुष्य है, अिसलिअे प्रेमसे देनेको तैयार होते हैं। लेकिन अितनी ही बात नहीं है, और भी बात है। गांधीजीकी करामात है, लेकिन परमेश्वरकी भी करामात है। परमेश्वरकी महिमा है कि अितनी सारी जमीन अपने हाथमें रखकर कोअी ले जानेवाला नहीं है, अैसा लोग जानते हैं। आखिर अितनी जमीनको वे खुद भी तो नहीं जोत सकते हैं। अिसीलिअे अितनी जमीन अपने हाथमें रखनेसे कोअी लाभ नहीं है, यह बात अुनके ध्यानमें आ गअी। अिसलिअे आज मैं वामनावतार हो गया और कहता हूं कि जमीन दे दो। तीन कदम दोगे तो भी बस है। लेकिन मुझे जो सौ अेकड़ मिले हैं, अुतने ही मेरे नहीं हैं। वे जो चार हजार अेकड़ बचे हैं, वे सारेके सारे मेरे ही हैं। जैसे वामनके तीन कदमोंमें सारा त्रिभुवन आ गया, वैसा यह मामला है। तो यह सारी खूबी अगर गरीब लोग समझेंगे, श्रीमान् समझेंगे और कम्युनिस्ट समझेंगे, तो सारा गांव सुखी होगा। यह तो मैं कम्युनिस्टोंका ही काम कर रहा हूं। यह अेक फच्चर है। अिस फच्चरको डालता हूं और फिर अुस पर कानूनका हथौड़ा पड़ेगा। अगर यह फच्चर काम नहीं देगी, तो हमारा काम सिर्फ कानूनसे नहीं होगा। अिसका आरंभ होता है दानसे और समाप्ति होगी कानूनसे। और कम्युनिस्ट आरंभ करेंगे लाठीसे और समाप्त करेंगे कानूनसे। आखिरमें कानूनसे समाप्ति वे भी करेंगे, मैं भी करूंगा। लेकिन आरंभमें मैं प्रेम और दान चाहता हूं, और वे लाठी तथा लूट चाहते हैं।

दा० मूं०

दुविधामें पड़े हुओंसे

"५३. अश्रद्धालु बनकर अिस विचारसे सान्त्वना प्राप्त मत करो कि चूंकि भारतकी किसी भी पार्टी या किसी भी कार्यक्रमकी आप पूरी तरह ताअीद नहीं करते, अिसलिअे आपको चुनावमें अपना मत नहीं देना चाहिये। आपके मत न देनेसे वह असर पैदा नहीं किया जा सकता, जो आप पैदा करना चाहते हैं। अपना मत न देकर आप अुस कार्यक्रमका विरोध घटाते हैं, जिसे आप सबसे ज्यादा नापसन्द करते हैं; और अिस तरह मतदानसे अलग रहकर भी सरकारकी रचनामें तो मदद करते ही हैं। खुद अपने प्रति और देशके प्रजातांत्रिक विधानके प्रति आपका यह फर्ज है कि जिस पार्टीके कार्यक्रमको आप सबसे ज्यादा नापसन्द करते हैं, अुसे मौका न दें। यह काम आप अुस पार्टीको अपना मत देकर कर सकते हैं, जिसे आप सबसे ज्यादा पसन्द करते हैं या कमसे कम नापसन्द करते हैं।

"५४. आप यह मत सोचिये कि किसी अैसे अुम्मीदवारको, जिसके जीतनेकी पूरी आशा न हो या किसी अैसी पार्टीको, जिसका सरकार बनाने लायक बहुमत नहीं होगा, मत देकर आप अुसे बेकार बनाते हैं। 'विरोध' का निर्माण भी अुतना ही जरूरी है, जितना कि सरकारका निर्माण। अिस बातका रेकार्ड कि बहुमत द्वारा अपनाये हुअे रास्तेसे दूसरा भी अेक रास्ता है, बहुमत पर नियंत्रण लगाता है और लोकशाहीको प्राणवान बनाये रखता है।"

[श्रीराम शर्मा लिखित 'चूज़िंग योर लेजिस्लेटर्स' से]

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-३-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

हरिजनसेवक

२२ दिसम्बर १९५१

मतदाताओंके नाम अपील

[यह अपील दिल्लीके अेक अप्रसिद्ध गांधीभक्त श्री देशराजने मेरे पास कअी माह पहले भेजी थी। ठीक समयकी प्रतीक्षामें मैंने अुसे अब तक रोक रखा था। अब वह प्रकाशित हो रही है। मैं अिस अपीलका पूरा समर्थन करता हूं। —कि० घ० म०]

"स्वतंत्र भारतके आम चुनावमें अब थोड़ा ही समय है। अिस विषयमें मैं आपसे अेक अपील किया चाहता हूं। मैं अेक गांधीभक्त हूं। मेरा किसी राजनैतिक पार्टीसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। मुझे किसी पार्टीकी हार या जीतके बारेमें तिल भर भी चिंता नहीं है। मैं चाहता हूं कि चुनावके समय हमें अेक सभ्य शांति-पसन्द राष्ट्रकी तरह काम करना चाहिये, ताकि यहां जान-मालका कोअी नुकसान न हो।

"आम तौर पर चुनावका समय खिंचाव और जोशका समय होता है। हमें चाहिये कि अिस बीच हम बुद्धिसे काम लेते हुअे शांतिपूर्वक रहें। अुम्मीदवारोंके अेजेंट बहुत चालाकीसे काम लेंगे। अखबारों, भाषणों और दूसरे कअी तरीकोंसे शरारत फैलानेका प्रयत्न करेंगे। स्वतंत्रताका हर किसीको गर्व होता है, परन्तु चुनावके बीच अिसका अितना दुरुपयोग किया जाता है कि हमें कअी बार शर्मसे सिर झुकाना पड़ता है। प्रायः हिंसा फूट पड़ती है। कुछ अुम्मीदवारोंके खिलाफके अेजेंट अिसके लिअे जिम्मेदार होते हैं। लेकिन जब झगड़ा पैदा होता है, तो वे गायब हो जाते हैं।

"हमारा देश अब अेक गणराज्य है। हमें अब पूरी राजनैतिक स्वतंत्रता है। आर्थिक स्वतंत्रताके लिअे तो अभी हमें बहुत कुछ करना है। मताधिकारकी दृष्टिसे हम सब समान हैं। यदि हम अिस अधिकारका सोच-विचारकर और ध्यानसे अुपयोग करें, तो यह कोअी छोटी बात नहीं है। हमें किसी भी पार्टीके अुम्मीदवारको मत देनेकी पूरी-पूरी स्वतंत्रता है। वोट तो हमारे पास अमानत है। अतः अिसके लिअे हमें किसी प्रकारके लालचमें नहीं फंसना चाहिये। यह तो अीश्वर और समाजके प्रति द्रोहके समान होगा। हमें अिस फर्जका दयानतदारीसे और अन्तःकरणकी आवाजके अनुसार पालन करना चाहिये। चाहे हम सबकी या किसीकी बात भी न सुनें, पर हमें झूठे प्रोपेगंडासे बचना चाहिये। हमें सोच-विचारकर अुस पार्टीको मत देना चाहिये, जिसे हम अपने हितके लिअे सबसे अच्छा समझें। अिस अधिकारका अुपयोग हम पांच वर्षमें केवल अेक ही बार कर सकेंगे, अतः ध्यानपूर्वक ही अैसा करना चाहिये। हमें पोलिंग स्टेशन पर पहुंचनेके लिअे अुम्मीदवारोंकी भेजी हुअी सवारीमें न जाना चाहिये। पैदल या अपना किराया देकर जाना चाहिये। हमें अुनके अेजेंटोंसे खाने-पीनेके लिअे कुछ भी स्वीकार न करना चाहिये। अिसका अिन्तजाम भी खुद करना चाहिये। मतदान तो हमारा अपने देशके प्रति फर्ज है। अिसके लिअे किसी अुम्मीदवार पर अहसान न समझना चाहिये।

"यदि हम अुम्मीदवारोंको लेकर किसीको बुरा-भला कहें, या किसीसे लड़ाअी-झगड़ा करें, तो यह हमारी मूर्खता ही होगी। राजनीतिसे कम परिचयवाले लोगोंको पता होना चाहिये कि अुम्मीदवार लोग तो मित्रोंकी तरह मिलते और बातचीत करते हैं, परन्तु हम हैं कि अुनके लिअे अेक-दूसरेका सिर फोड़नेको तैयार हो जाते हैं। यह कैसी लज्जाकी बात है!

"हमें पोलिंग स्टेशन पर अिन्तजाम करनेवालोंको परेशान करनेवाली कोअी बात बिलकुल नहीं करनी चाहिये। भारत-सरकारने सबके लिअे बेरोक-टोक चुनाव लड़नेका वचन दिया है, और हमें मानना चाहिये कि वह अिसका पालन करेगी। कोअी सरकारी कर्मचारी यदि अिसमें रुकावट डालेगा, तो वह देश और सरकार दोनोंका द्रोह करेगा। यदि कोअी अैसा करे, तो हमें चाहिये कि अिस बातकी रिपोर्ट हम अूपरवाले लोगोंको भेज दें। यदि हम कानूनको अपने हाथमें लेते हैं, तो अिसका परिणाम सबके लिअे खतरनाक हो जाता है। यदि हम देखें कि किसी विशेष स्थान पर शरारत हो रही है, तो हमें अुसमें भाग न लेना चाहिये और वहांसे चल देना चाहिये। अिस तरह वह अपने आप ही समाप्त हो जायगी।

"किसी भी व्यक्तिको किसी दूसरे व्यक्ति पर यह दबाव नहीं डालना चाहिये कि वह किसी विशेष अुम्मीदवारको ही अपना मत दे। अिस बातके लिअे सबको चाहिये कि वे दूसरोंको — चाहे वे पिता-पुत्र हों या पति-पत्नी — पूरी स्वतंत्रतासे काम लेने दें। हमें कोअी झगड़ा नहीं खड़ा करना चाहिये। अपना मत देकर हमें सीधे घर ही चले जाना चाहिये, ताकि दूसरे लोग भी आरामसे अपना वह कार्य पूरा कर सकें।

"हमें चाहिये कि हम अपने मित्रों और परिचितोंकी सहायतासे मतदाताओंकी लिस्ट (सूचीपत्र) में अपना नाम, पेशा, आयु आदि अच्छी तरह देख लें, ताकि हमें अुम्मीदवारोंके अेजेंटोंकी सहायता पर निर्भर न होना पड़े।

"यदि अेक गांवके सारे लोग अिस बातकी परवाह न करें कि वे अपना-अपना मत भिन्न-भिन्न अुम्मीदवारोंको देंगे और अिकट्ठे मित्रोंकी तरह पोलिंग स्टेशन पर जायं, तो यह कितनी अच्छी बात हो, और अिस दृश्यको देखकर कितनी प्रसन्नता हो! अुसमें झगड़ेकी कोअी बात ही न होनी चाहिये। जिस तरह हम भिन्न-भिन्न खेल खेलते हैं, भिन्न-भिन्न देवताओंकी पूजा करते हैं और भिन्न-भिन्न खाना खाते हैं, अुसी तरह चुनावमें भी हम भिन्न-भिन्न अुम्मीदवारोंको अपना मत दे सकते हैं। अिस बातके लिअे हमें सहिष्णुता पर पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिये। तभी हमारा देश अेक संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक जनराज्य कहा जा सकेगा।"

देशराज

महादेवभाअीकी डायरी

[तीसरा भाग]

संपा० नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६–०–० डाकखर्च १–१–०

अेक धर्मयुद्ध

लेखक: महादेव देसाअी

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–३–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

सेक्युलर या धार्मिक ?

सेक्युलर राज्यका क्या अर्थ है ? भारत क्या सेक्युलर राज्य है ? यदि हां, तो किस तरह और कैसे ? अिन सब प्रश्नोंके अुत्तर श्री विनोबाजीने दिल्लीमें राजघाट पर ता० १५-११-'५१ के रोज प्रार्थना-सभामें दिये।

विनोबाजीने कहा : "हमारी अिस पैदल यात्रामें कअी तरहके अनुभव आते हैं और अनन्त प्रश्न पूछे जाते हैं। कुछ प्रश्न तो समान होते हैं और हर जगह वे ही पूछे जाते हैं। अुनमें अेक प्रश्न अक्सर होता है 'सेक्युलर स्टेट' (असाम्प्रदायिक राज्य) के बारेमें। अेक जगह तो अेक भाअीने कहा : 'मनु महाराजने धर्मके दशविध लक्षण बताये हैं,* लेकिन हमारी सरकार कहती है कि हम तो धर्मको नहीं मानते। तब हमारा क्या कर्तव्य होता है ? क्या हम मनु महाराजकी आज्ञाका अनुसरण करें या अिस धर्मविहीन सरकारकी कल्पनाका अनुसरण करें ?'

"मुझे अिस शब्दको विस्तारसे समझाना पड़ा। अक्सर यह होता है कि अगर कोअी विचारका प्रश्न पूछा जाय, तो चाहे वह बार-बार क्यों न पूछा जाय, मैं विस्तारसे अुत्तर देनेकी कोशिश करता हूं। क्योंकि चित्तके सन्देह और संशय हमेशा सारे जीवनको कलुषित करते हैं, और अक्सर देखा यह जाता है कि बहुतसे सन्देह शब्द-मूलक होते हैं। शब्दोंका ठीक प्रयोग नहीं किया जाता, अिसलिअे बहुतसी गलतफहमियां हुआ करती हैं। मनु महाराजने दशविध धर्म बताया है। अीसाकी दशविध आज्ञा ख्रिस्ती और यहूदी धर्ममें मशहूर है। वे दस आज्ञाअें और मनु महाराजका दशविध धर्म अेक ही हैं; बल्कि यदि अैतिहासिक दृष्टिसे देखें, तो शायद यही निष्कर्ष निकलेगा कि मनु महाराजकी दशविध आज्ञाअें रूपान्तर होकर यहूदी और ख्रिस्ती धर्ममें पहुंच गअी हैं। मनु अेक अत्यन्त प्राचीन ऋषि हो गये हैं। मनुस्मृति तो अुस हिसाबसे बहुत अर्वाचीन ग्रंथ है, लेकिन मनु स्वयं बहुत प्राचीन हैं। और अुनके वचनोंका अितना असर हमारे समाजमें था कि वैदिक धर्ममें अेक जगह कहा है, 'यत् किंच मनुः अवदत् तद्भेषजम्।' मनुने जो भी कहा है वह भेषज है, हितकारी पथ्य है, औषधि है; चाहे गुणकारी औषधि कड़वी मालूम पड़े, तो भी परिणाम गुणकारी होता है, अिसलिअे अुसका सेवन करना चाहिये। अैसा वाक्य मनुके विषयमें है। वह आधुनिक मनुस्मृतिको ध्यानमें रखकर नहीं, बल्कि प्राचीन मनुवचनको, जो श्रद्धासे परम्परागत समाजमें पहुंच गया है, ध्यानमें रखकर कहा गया है। मैंने यह सब अुस भाअीको समझाया। समझाया क्या मानो अेक क्लास ही लिया और मनुकी दशविध आज्ञाअें समझायीं। अुसका अेक-अेक लक्षण अैसा है, जिसके बगैर न समाजका धारण हो सकता है, न व्यक्तिका जीवन सफल हो सकता है। अुस आज्ञामें अेक अस्तेय व्रत है यानी चोरी न करना। अस्तेय तो धर्मसंगत है और हमारी सरकार धर्मातीत है। तो क्या वह चोरी चाहेगी ? अुसमें शौचम् धर्म बताया है। तो क्या हमारी सरकार सफाअी और आरोग्य नहीं चाहेगी ? अुसमें विद्याका अुल्लेख है। तो क्या सेक्युलर स्टेटमें विद्या न रहेगी, अविद्या रहेगी ? और वहां सत्यको धर्म बताया है, तो हमारी सरकारने भी 'सत्यमेव जयते' यह बिरुद बनाया है। यह बिरुद वाक्य अुपनिषदोंमें से लिया गया है, जो अिस भारतभूमिके मूल ग्रन्थोंमें से हैं।

"तो धर्म शब्द अितना विशाल और व्यापक है कि अुसके सारे अर्थ बतानेवाला ग्रंथ मैंने अब तक किसी भाषामें नहीं देखा। सारे अर्थ तो जाने दीजिये, अुसके बहुतसे अर्थ मैंने देखे हों, अैसा भी कोअी ग्रंथ मैंने नहीं पाया है। अिसलिअे जो लोग सरकारको धर्मविहीन कहते हैं, वे तो मानो अुसे गाली ही देते हैं। और धर्मातीत भी क्या हो सकता है ? जो धर्मके बाहर है, वह सिवा अधर्मके और क्या हो सकता है ? बल्कि अगर हम अितना भी कहें कि धर्मसे असंबद्ध है, तो भी अर्थ ठीक नहीं हो पाता। वह अैसा शब्द है। धर्मसे असंबद्ध, अुससे विहीन अैसी हमारी सरकार हो, तो वह तो अेक भ्रम प्रचार ही हो सकता है। और अैसा भ्रान्त प्रचार काफी हुआ है और कुछ जाननेवाले अच्छे लोगोंने भी अिस तरहकी टीका की है।

"तो यह सारा क्या हो रहा है ? सेक्युलर शब्दका तर्जुमा हमारी भाषामें हम किस तरह करें, यह अेक नाहकका सवाल हमारे सामने पेश हुआ है। सेक्युलरका अर्थ अगर हम पंथातीत या अपांथिक करें, तो भी ठीक अर्थ प्रगट नहीं होता। पंथ यानी अंग्रेजीमें जिसे हम 'पाथ' कहते हैं। तो पंथातीत यानी मार्गविहीन सरकार हुअी। यह शब्द भी गुमराहका पर्याय है। अिसके लिअे अपांथिक शब्द भी नहीं चल सकता।

वेदान्ती

"तो अिसका अर्थ बतानेके लिअे मैंने वेदान्ती शब्द चुन लिया और अुस भाअीको समझाया कि हमारी सरकार वैदिक नहीं होगी, बल्कि वेदान्ती होगी। वेदान्तमें किसी अुपासनाका निषेध नहीं है। जितनी अुपासनाअें हैं, अुन सबको वेदान्ती समान भावसे देखते हैं। फिर भी वेदान्तीकी अपनी निजकी कोअी अुपासना नहीं है। तो अगर हम वेदान्ती सरकार कहें, तो कुछ अच्छा अर्थ प्रकट होता है।

आध्यात्मिक मूल्य

"अेक दफा अैसा अनुभव हुआ कि रामकृष्ण आश्रमके अेक सन्यासी पुरुष कहने लगे : 'हमार देश किधर जा रहा है ?' सन्यासी सज्जन थे और अक्सर देखा गया है कि किसी प्रकारकी साम्प्रदायिक भावना रामकृष्ण मिशनके लोगोंमें नहीं होती। लेकिन फिर भी अुन सन्यासी भाअीने पूछा, 'हमारा देश किधर जा रहा है ?' मैंने पूछा : 'किधर जा रहा है ?' तो बोले सेक्युलर स्टेटवाले तो आध्यात्मिक मूल्योंका अिनकार करते हैं। मैंने कहा अगर अैसी बात होती, तो सत्यको बिरुद न बनाया जाता। अिसलिअे मेरा तो कहना है कि अंग्रेजी शब्दके कारण ही सारी गड़बड़ी हुअी है। अिसलिअे मैंने सेक्युलरके लिअे वेदान्ती शब्दका प्रयोग किया है। हमारी सरकार मेरी दृष्टिसे वेदान्ती सरकार है। जिस वेदान्तको आप मानते हैं, अुसको वे भी मानते हैं। हमारे यहां २१ वर्षके बाद हरअेकको वोटका अधिकार है। मैंने अुनसे कहा कि आप २१ सालकी अुम्रवाली बात भूल जाअिये। परन्तु हरअेकको हमारे विधानमें जो अेक वोटका अधिकार दिया गया है, वह किस बुनियाद पर दिया गया है ? अगर शरीरकी बुनियाद पर दिया गया होता, तो हरअेकके शरीरमें भेद है। अेकका शरीर दूसरेके शरीरसे भिन्न होता है। किसीका शरीर दूसरेके शरीरसे तीन गुना भी बलवान हो सकता है। अगर शरीरकी बुनियाद हो, तो अेकको अेक वोट दिया जाय, तो दूसरेको दो, तीन या चार भी देने होंगे। और अगर बुद्धिकी बुनियाद पर अर्थ लगाते हैं, तो अेककी बुद्धि दूसरेकी बुद्धिसे हजार गुना कमीबेशी हो सकती है। क्योंकि बुद्धिमें तो हजार गुना फर्क हो सकता है। फिर अेक वोटका आधार अिसके सिवा क्या हो सकता है कि हरअेकमें अेक आत्मा विराजमान है। सिवा आत्मज्ञानके और कोअी बुनियाद हो ही नहीं सकती। हां, २१ वर्ष अुम्रकी कैद है, मनुष्यको वोट है, पशुको नहीं। फिर किस बुनियाद पर सेक्युलर कहा ? अेक तो यह कि हमारा बिरुद 'सत्यमेव जयते' है और दूसरा यह कि सबको ही समान माना गया है। दोनोंको मिलाकर स्टेट सेक्युलर बन सकती है। यानी

* धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

www.vinoba.in

सेक्युलर स्टेटका आधार आत्मज्ञान ही है। यह जब मैंने कहा तब वह शांत हुअे। अुन्होंने पूछा कि क्या आप जाहिरा तौर पर कह सकते हैं कि सरकार वेदान्ती है। मैंने कहा कि मैं जाहिरा तौर पर नहीं कहूंगा। आपको समझानेके लिअे मैंने अिस शब्दका प्रयोग किया है। हमारी सरकार नास्तिक नहीं है। वह आध्यात्मिक मूल्योंको मानती है, आत्माको मानती है, अुसकी समानताको मानती है। परंतु फिर भी वेदान्त जितनी गहराअीमें जा सकता है, अुतनी गहराअीमें वह नहीं जा सकती। अब अगर कोअी अेक शब्द सेक्युलरका तर्जुमा नहीं कर सकता और भाव प्रगट करना ही है, तो 'निष्पक्ष न्यायनिष्ठ व्यावहारिक सरकार' कह सकते हैं। अेक ही किन्तु कठिन संस्कृत शब्दमें कहना हो, तो 'लोकयात्रिक सरकार' कह सकते हैं। यह कठिन शब्द है, लेकिन 'सेक्युलर' का कुछ सही अर्थ प्रकट हो सकता है।

अंग्रेजीकी आफत

"पर यह सारी आफत क्यों? अिसलिअे कि हमारी सरकारका सारा चिन्तन अंग्रेजीमें होता है, फिर अुसका तर्जुमा करना पड़ता है। किसी भाषाका अनुवाद दूसरी भाषामें अेकदम ठीक नहीं होता। अगर हम अपनी जबानमें सोचते होते, तो वे सारी गलत-फहमियां टल जातीं जो आज हो रही हैं। और अिसका कारण यह है कि अंग्रेजी भाषाको १५ सालका जीवन दे दिया गया है। हमारी सरकारका कारोबार किस तरह चलता है, अुसका ज्ञान तो हमारे यहांके अेक पढ़े-लिखे किसानको भी अुतना नहीं होता, जितना अिंग्लैंड व अमरीकाके लोगोंको होता है। हमारी जनताको अंधेरेमें रखना ठीक नहीं है। अिस हालतमें अंग्रेजी भाषासे जितने शीघ्र मुक्त हो सकें होनेकी आवश्यकता है; और अिस आवश्यकताको मैं कदम-कदम पर देख रहा हूं। धर्म शब्द अितना महान है कि वह भारतीय जनताको प्राणके समान है। लेकिन अब अुसे टालनेकी वृत्ति हो रही है।

"सेक्युलर शब्दके कारण बड़ेसे बड़े लोगोंमें गलतफहमी होती है। अगर किसी स्कूलमें वेदकी प्रार्थना होती है, तो पूछते हैं कि सेक्युलर सरकारमें वैदिक मंत्र कैसे पढ़ा जा सकता है? गत सप्ताह मैं अलीगढ़ विश्वविद्यालयमें गया था। वहांके विद्यार्थियोंने और प्रोफेसरोंने बहुत ही प्रेमसे मेरा स्वागत किया। मैंने अुन्हें जो बातें बताअीं, वे साधारण नहीं थीं, गम्भीर थीं। मैंने सब धर्मोंकी शुद्धिकी बात कही थी और अिस्लाम धर्मकी शुद्धिकी व्याख्या भी की थी। अुन लोगोंका रिवाज है कि आरम्भमें खड़े होकर कुरानकी आयत पढ़ें। जाकिर हुसैन साहबने मुझसे पूछा, तो मैं बहुत खुशीसे खड़ा हो गया। सारा कार्यक्रम बड़े प्रेमसे हुआ। मुझे भी कुरानका कुछ अभ्यास है, अिसलिअे आयतें सुनकर खुशी हुअी। लेकिन अगर अिस पर कोअी कहे कि सेक्युलर स्टेटकी युनिवर्सिटीमें कुरानकी आयतें क्यों पढ़ी जाती हैं, तो यह गलतफहमी है। अेक परदेशी शब्दके कारण अैसी गलतफहमी हो रही है। आज मैंने अिसका जिक्र आप लोगोंसे अिसलिअे किया कि आप देखेंगे कि आगामी चुनावमें अिस शब्दका कितना ही दुरुपयोग किया जायगा; और जगह-जगह अिसके कारण आज भी गलतफहमियां पैदा की जाती हैं।"

(ता० १७-११-'५१ के 'हिन्दुस्तान' से अुद्धृत)

सर्वोदय सम्मेलन, १९५२

आगामी सर्वोदय सम्मेलन अुत्तरप्रदेशमें अप्रैलके पहले या दूसरे सप्ताहमें होगा। स्थान और तारीख शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी।

सेवाग्राम, ८-१२-'५१

वल्लभस्वामी
मंत्री, सर्वोदय समाज

www.vinoba.in

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा — ८

चिरगांव

पिछले पत्रमें हमने विंध्य प्रदेशका विवरण दिया है। अब (ता० १६-१०-'५१ को) पुनः अुत्तरप्रदेशमें प्रवेश करना था, और चिरगांवसे यात्रा शुरू होती थी। विंध्य और अुत्तरप्रदेशकी सीमा पर नयना नदी है। ठीक जलपानके समय हम लोग अिस स्थान पर पहुंचे। स्थान देखकर विनोबाजी बहुत प्रसन्न हुअे। कलेवेके लिअे आये हुअे अब तकके कुछ अत्यन्त श्रेष्ठ स्थानोंमें से यह अेक था। नयना, अुसका तृणसंकुल तीर, और सामनेकी ओर निकली हुअी पगदंडी, सब मानो बाणसे सुसज्जित धनुषकी तरह शोभा देता था। और फिर 'ठाकोरजी' द्वारा किया गया विनोबा और अुनके साथियोंका स्वागत। 'ठाकोरजी' अेक पक्षी है। अुर्दूमें अिसे फ़ाख्ता कहते हैं, हिन्दीमें पंडुकी, गलगल, और गुजरातीमें होलो। विनोबाजीकी अिससे बहुत मैत्री है। कितने ही काममें व्यस्त हों, अुसकी ध्वनि कानोंमें पड़ती है तो सब कुछ छोड़कर वे 'ठाकोरजी, ठाकोरजी' करने लगते हैं।

नयनाके बाद थोड़ी ही दूर पर बेतवाको पार करना था। बीचके देहातोंमें लोगोंने कलेवेका प्रबंध किया था। विनोबा और सभी साथी कलेवा कर चुके थे, अिसलिअे कलेवेका अब सवाल ही नहीं था। "भूमिदान करते हों तो कीजिये", विनोबाने कहा। अेक भाअीने दो अेकड़ दिये, दूसरेने अेक बीघा। करीब पचीस-तीस लोग अुपस्थित होंगे। "आपमें भूमिहीन कितने हैं?" — विनोबाने जानना चाहा। जिन्होंने अपनेको भूमिहीन बताया, अुनमें से चमार, लुहार, कुम्हार जैसे लोगोंको बाद करके केवल मजदूरपेशा लोगोंको चुना। विनोबाने गांववालोंसे कहा, "देखिये, ये दस लोग भूमिहीन हैं। आप लोग कमसे कम दस अेकड़ तो दीजियेगा।" और अुस छोटेसे गांवके अुन गरीब किसानोंने फौरन दस अेकड़ कर दिये।

थोड़ी देरमें हम बेतवाके किनारे आ पहुंचे। विशाल पाट। सुन्दर यमुनाका-सा नीर। नावमें सब लोग सवार हुअे। अुस पार जानेमें पचास मिनट लगे। चिरगांवके लिअे अभी करीब चार मील और चलना था। भजन-मंडलियां और चिरगांवकी जनताके प्रतिनिधि प्रतीक्षा कर रहे थे। करीब आधा रास्ता तय करने पर सामनेसे कविवर मैथिलीशरणजी गुप्त आते दिखाअी दिये। और अुनके साथ श्रीमती महादेवीजी वर्मा, श्री दिनकरजी, श्री अिलाचंद्रजी जोशी आदि शारदोपासक भक्तजन भी। महाकवि और महातपस्वीकी वह भेंट अनेक अव्यक्त भावोंकी प्रतीक थी।

तोरण-पताकाओंसे सुसज्जित मार्गसे गुजरकर निवासस्थान पर पहुंचे, तो गुप्त परिवारकी माताओंने, बहनोंने तथा बहू-बेटियोंने अत्यन्त हार्दिक स्वागत किया। श्री सियारामशरणजीने 'गीता-संवाद' का नया संस्करण विनोबाजीको भेंट किया।

अपने प्रास्ताविक भाषणमें विनोबाजीने सबको धन्यवाद देते हुअे कहा: "मुझे खुशी है कि अिस काममें कविवर मैथिली-शरणजी जैसोंका भी आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ है।" प्रार्थना-प्रवचनमें 'गीतासंवाद' के नये संस्करणका भी जिक्र किया और भूदान-यज्ञके लिअे अिस भेंटको अेक शुभ शकुन माना।

कविवरने विनोबाजीके आगमनके अवसर पर कुछ पंक्तियां रची थीं। अुन्होंने स्वयं वे पंक्तियां पढ़कर सुनाअीं। (ता० ३-११-'५१ के 'हरिजनसेवक' में ये प्रकट हो चुकी हैं।)

चिरगांवका मुकाम यथानाम चिरस्मरणीय ही रहेगा। क्योंकि राष्ट्रभारतीके जो महान अुपासक वहां अुपस्थित थे, अुनकी सद्-भावनाओंका कोअी नाप नहीं हो सकता था। शामको तो श्री वृंदावनलालजी वर्मा भी आ पहुंचे थे। अुस सान्ध्यवेलामें

कविजनोंके मन-मयूर डोल अुठे और सभीने अपनी-अपनी बानगी विनोबाजीको सुनाअी, जिसमें बहुत ही प्रेरक भाव सगुण हो अुठे थे। वे भाव विनोबाको खूब रुचे। और समय होता तो विनोबा खुद भी कुछ सुनाते। परंतु आज वे 'गीतासंवाद' में से स्थितप्रज्ञ दर्शनवाले अंशको अंतिम बार देख लेना चाहते थे। दोपहरको भी अुन्होंने अुसमें समय दिया था और कुछ सुधार सुझाये थे। प्रार्थनामें स्वयं अुन श्लोकोंको गाया भी था।

सवेरे बिदाके समय पुनः सभी भक्तजन अपने अतिथि-देवताको शहरकी सीमा तक पहुंचाने आये। सियारामशरणजीसे नहीं रहा गया, तो वे भी काफी देर साथ चले।

चिरगांवमें कुल १५० अेकड़ भूदान मिला। चिरगांवसे बड़ागांव, और बड़ागांवसे झांसी। बड़ागांवमें कार्यकर्ताओंका अभाव नजर आया। जब अेक किसानने देखा कि अुसके गांवमें दूसरे गांववालोंने थोड़ासा भूदान किया है, पर बड़ागांवसे भूदान हुआ ही नहीं, तो अुसे अपने गांवके लिअे न जाने कितनी लज्जाकी अनुभूति हुअी। अुसने अपनी सारी भूमि, जो आधे अेकड़से भी कम थी (.४३) और जिसका सरकारकी ओरसे अुसे अभी-अभी स्वामित्व प्राप्त हुआ था, भूदानमें समर्पित कर दी।

झांसी

झांसीसे चार मील अिस ओर ही भीड़ होनी शुरू हो गअी थी। बढ़ते-बढ़ते बाढ़-सी आ गअी। अब भीड़को सम्हालना कठिन हो गया। विनोबाजीने अपनी दोनों बेटियों, मृदु और मितु, को साथ लिया और चलनेकी गति अितनी तेज कर दी कि वे चलनेके बजाय दौड़ने ही लगे। जो लोग दौड़ पाये, वे दौड़े। बाकीके अपने आप पीछे रह गये।

निवासस्थान पर रानी लक्ष्मीबाअीकी अेक विशाल मूर्तिके पास ही मंच रखा गया था। विनोबाने अपने प्रारंभिक भाषणमें कहा कि झांसीका अितिहास तो बहुत है। परंतु सारा भारतवर्ष झांसीको जो जानता है, वह अुसके अितिहासके कारण नहीं, केवल महारानी लक्ष्मीबाअीके कारण। बोलते-बोलते वे गद्गद हो गये। अुन्होंने कहा: "आप भूदान तो देंगे, अुदारतापूर्वक भी देंगे, पर मैं चाहता हूं कि आप वीरतापूर्वक भी दें।" सवेरे वे दौड़ चुके थे। अुस बारेमें भी कहा कि महारानी लक्ष्मीबाअीके वीर स्मरणने ही अुन्हें दौड़नेकी प्रेरणा दी थी।

और आज भी शामकी सभामें निवाड़ीकी तरह भूदानने वर्षाका रूप धारण कर लिया। विनोबाजी साढ़े तीन बजे सभास्थान पर आये और सात बजे तक बैठे। कताअी, प्रवचन, प्रार्थना, भूदान, प्रश्नोत्तर, सारा कार्यक्रम लक्ष्मीबाअीकी अुस भूमिको शोभा दे, अैसा ही हुआ। स्त्रियोंने भी महारानी लक्ष्मीबाअीकी परंपराके अनुसार ही दिया। अेक बहन श्री कनककुंअरने अपनी सारी भूमि, ५००० अेकड़, दे दी। दूसरी अेक बहन श्री चंद्रमुखी देवीने अपने अस्सीमें से चालीस अेकड़ दे दिये। जनाब नजीरखांने जमींदारीका सारा हिस्सा दे दिया। और भी अैसा वीरतापूर्ण दान हुआ।

झांसीवालोंकी ओरसे मानपत्र भी दिया गया था। अुसके अुत्तरमें विनोबाने कहा: "मैं मानपत्रके लिअे आपका अुपकार मानता हूं। अिसलिअे नहीं कि अुसमें मेरी स्तुति की गअी है, बल्कि अिसलिअे कि मैं जिस कामके लिअे निकला हूं, अुस कामके महत्त्वको आपने समझा है और अुसमें अपना पूर्ण सहयोग देनेका आश्वासन भी दिया है।"

विद्यार्थियोंके प्रश्नोंका जवाब देते हुअे विनोबाने बताया कि वे स्वयं विद्यार्थी हैं, और अिसलिअे विद्यार्थियोंसें अुन्हें पूर्ण सहानुभूति है। अुनके भूदान-यज्ञमें विद्यार्थी भी मदद कर सकते हैं। वे अपने पालकोंसे भूदान करनेके लिअे कहें। अगर पालक बालकोंके भविष्यकी चिन्ताका कारण बतावें, तो विद्यार्थियोंका काम है कि वे अपने पालकोंको अिस चिन्तासे मुक्त कर दें। "हम अपनी आजीविका प्राप्त कर लेंगे। हमारी चिन्ता आप न करें। आप भूदान-यज्ञमें भूमि दे दें।" अिस तरह वे माता-पिताको समझा सकते हैं।

अेक विद्यार्थीने अिस विज्ञान-युगमें भी पैदल यात्राका कारण पूछा, तो विनोबाने जवाब दिया: "अगर हम हवाअी जहाजमें घूमते, तो काम भी हवामें ही होता। जमीन पर नहीं हो पाता। मैं तो जमीन पर काम करना चाहता हूं।"

प्रश्न गम्भीर थे और मनोरंजक भी। अेक भाअीने पूछा: "आपके जैसा हम बनना चाहें, तो कैसे बन सकते हैं?" "मेरे दोषोंको छोड़कर और गुणोंको लेकर। और अिसी तरह दूसरोंके भी गुणोंको लेकर और दोषोंको छोड़कर। अैसा आप करेंगे, तो मुझसे भी महान बनेंगे।"

"राजनीतिमें हिस्सा लें या नहीं?" अिस प्रश्नका जवाब देते हुअे कहा: "राजनीतिमें हिस्सा ले सकते हैं, राजनैतिक दलबंदीमें नहीं। अेक बात न करें। भेड़ न बनें। शेरकी तरह रहें। भेड़ोंके संघटन हुआ करते हैं। शेरोंका कोअी संघटन नहीं होता। अेक बात और है। आजकल हर कोअी अपने विचार विद्यार्थियों पर लादना चाहता है। मैं आपको आगाह कर देना चाहता हूं कि आपको अैसे आक्रमणसे बचना चाहिये।"

अेक महिलाके सवालका जवाब देते हुअे कहा: "पुरुषोंके दुर्गुणोंका अनुकरण आप न करें, बल्कि अुन दुर्गुणोंका अिलाज करें। अुसके लिअे जरूरत हो तो सत्याग्रह भी करें। अब आगामी महायुद्धको रोकनेके लिअे महिलाओंको चाहिये कि वे अहिंसक शक्तिका विकास करें, जिसमें सत्याग्रहका भी समावेश होता है। महिला शब्द मुझे प्रिय है, क्योंकि अिस शब्दसे महान कार्यका बोध होता है। आपके लिअे आज यही महान कार्य है कि आप अपने भीतर अहिंसक शक्तिका तेज प्रकट करें।"

भूदानसे होनेवाले फ्रेग्मेंटेशन (जमीनके छोटे छोटे टुकड़े)के औचित्यके बारेमें पूछे गये सवालका जवाब देते हुअे विनोबाने कहा:

"अगर पांच करोड़ अेकड़ भूमि हस्तांतरित हो जाती है, तो अिससे जो महान क्रांति होगी, अुसके मुकाबले यह फ्रेग्मेंटेशनवाला प्रश्न बहुत मामूली है। वास्तवमें यह सवाल ही व्यर्थ है। आज चीनमें कम्युनिस्टोंकी हुकूमत है। परंतु वे वहां फ्रेग्मेंटेशनके सिद्धान्तसे ही काम कर रहे हैं। किसानोंको छोटे-छोटे टुकड़े दे रहे हैं। अुन छोटे-छोटे हिस्सोंवाले मालिकोंके बीच फिर आगे कअी बातों पर सहकार हो सकता है, जैसे दस-पांच परिवार मिलकर बैल जोड़ियां रख सकते हैं, हरअेक किसान अलग-अलग रखवाली करे, अिसके बजाय वह काम सहकारसे किया जा सकता है, अित्यादि।"

अेक विद्यार्थीने सिनेमाके बारेमें पूछा, तो विनोबाने स्वयं अुससे अुलटा सवाल किया:

"यहां मैथिलीशरणजी बैठे हैं। अुन्हें पूछिये कि अुनकी प्रज्ञाको जो स्फूर्ति मिलती है वह सिनेमा देखनेसे मिलती है, या आकाशमें चमकनेवाले अिन नक्षत्रोंका अभ्यास करनेसे?"

अेक भाअीने हिन्दू संघटनके औचित्यके बारेमें पूछा, तो जवाब मिला: 'हिन्दू संघटन यानी मुस्लिम द्वेष तो नहीं हो सकता। अगर चारित्र्य-संघटन होता है, या सेवा-संघटन होता है, और वह 'सर्वेषाम् अविरोधेन' तत्त्वसे होता है, तो अुसका औचित्य हो सकता है। क्या गांधीजीसे बढ़कर हिन्दूधर्म पर प्रेम करनेवाला और हिन्दू संघटनको बल देनेवाला कोअी दूसरा हुआ है? गीता-प्रचारको गांधीजीने जितना महत्त्व दिया, अुतना शंकराचार्य और ज्ञानदेवके बाद किसीने नहीं दिया। लेकिन अुन्होंने वही 'सर्वेषाम् अविरोधेन' सिद्धान्तसे काम किया। अिस तत्त्वको पहचानो। अिसकी कसौटी पर अपने कामको कसो।"

www.vinoba.in

अंतमें अेक भाअीने पूछा: "विनोबाजी, क्या आप हमको अेक अच्छा संगीत सुना सकते हैं?" विनोबाजीने तुरन्त कहा—"बहुत अच्छा। अगर समय रहा तो जरूर सुनाअूंगा।" और यद्यपि समय काफी हो चुका था, विनोबाने अपनी अत्यन्त भावपूर्ण वाणीसें कबीरका सुप्रसिद्ध भजन 'लोकाजान न भूलो भाअी, खालिक खलक खलकमें खालिक सब घट रहा समाअी" गा सुनाया। गानेसे पहले अुसका अर्थ समझाया। और अंतमें कहा: "जो भाव अिस भजनमें कबीर साहबने गूंथे हैं, अुसी परमेश्वर भावनासे आप सबको मैं प्रणाम करता हूं।"

यह अंतिम प्रसादी पाकर तो सभी आकंठ तृप्त हुअे।

दा० मूं०

झगड़ालू शब्द

हमारे अनेक झगड़े सिर्फ हमारे कअी शब्दोंके कारण ही पैदा होते हैं। कुछ शब्द अपनी भाषाके क्षेत्रमें यों भी काफी अुपद्रव करते हैं। फिर, जब अुनमें अधिकांश लोगोंके लिअे अपरिचित कोअी नया या अतिरिक्त अर्थ भरनेकी कोशिश होती है, तब अुनका अुपद्रव और बढ़ जाता है।

दूसरी भाषामें अगर अुनका सही अनुवाद संभव न हो और अुन्हें ज्योंका त्यों या नया समानार्थी शब्द गढ़कर लेनेके बजाय दूसरी भाषाके किसी प्रचलित शब्दके रूपमें ग्रहण किया जाय, तब तो अुनकी अुपद्रवकी शक्ति चौगुनी हो जाती है।

अिस अंकमें 'सेक्युलर या धार्मिक?' शीर्षकसे विनोबाजीका दिल्लीमें दिया हुआ अेक भाषण दिया जा रहा है। अिसमें अुन्होंने 'सेक्युलर' शब्द, जिसका प्रयोग हम अपने संविधानके वर्णनमें अकसर करते हैं, और भारतीय भाषाओंमें व्यवहृत 'धर्म' शब्दको लेकर जो वितंडावाद खड़ा हो गया है अुसकी चर्चा की है। 'सेक्युलर' को 'धर्मविहीन' कहना और 'धर्म' का अनुवाद 'रिलीजन' करना, ये दोनों ही गलत हैं। अंग्रेजी शब्द 'रिलीजन' का जो अर्थ है, वह 'धर्म' का नहीं है। वास्तवमें 'धर्म' शब्दका भाव अेक अंग्रेजी शब्द पूरी तरह प्रगट कर ही नहीं सकता। बहुत पुराने समयसे 'धर्म' शब्द प्रसंगके अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ सूचित करता आया है। लेकिन 'रिलीजन' के अर्थमें अुसका व्यवहार कभी नहीं हुआ। यह तो अंग्रेजी भाषासे हमारे संपर्कके बाद शुरू हुआ। 'रिलीजन' शब्दके अर्थके पास पहुंचनेवाले हमारे शब्द 'पंथ', 'मार्ग' या 'संप्रदाय' हैं। किसी समय 'पाखण्ड' शब्द ठीक 'रिलीजन' के अर्थमें प्रयुक्त होता था, लेकिन बादमें अुसका अर्थ गिर गया। अिसी तरह अंग्रेजीमें 'सेक्युलर' शब्दके अेकसे ज्यादा अर्थ हैं। हमारी सरकार अुसका अुपयोग अेक विशेष अर्थमें करती है। वह अर्थ प्रसंगके अनुसार यह है कि भारत किसी खास संप्रदाय या पंथको राज्य-पंथके रूपमें स्वीकार नहीं करता। भिन्न-भिन्न संप्रदायों, पंथों, और अुनके अनुयायियोंमें वह कानून और शासनकी दृष्टिसे किसी तरहका भेदभाव नहीं करेगा। अिसका अर्थ यह नहीं है कि वह हरअेकका या किसी भी संप्रदायका या पंथका नाश या दमन करेगा। अलबत्ता, कोअी संप्रदाय या पंथ व्यापक नैतिक सिद्धान्तोंका भंग करेगा, तो वह अुसके खिलाफ जरूर कदम अुठायेगा। जैसा विनोबाने समझाया है, दरअसल यह बात नहीं है कि हमारी सरकार देशसे सब धर्मोंका निर्मूलन करना चाहती है। और धर्मका—यानी अुसके शुद्ध भारतीय अर्थके अनुसार मानव कर्त्तव्य और नीतिके नियमोंका—विध्वंस तो वह करना ही नहीं चाहती।

विनोबाने 'सेक्युलर' के लिअे 'वेदांती' शब्द सुझाया है। लेकिन अुसमें भी अिस शब्दमें अैसा नया अर्थ भरनेकी कोशिश है, जो अुसके सामान्य अर्थका अंग नहीं है। अैसे प्रयत्न खतरेसे खाली नहीं हैं। गांधीजी द्वारा व्यवहृत 'वर्ण' और 'ट्रस्टी' शब्दोंकी तरह 'वेदांती' शब्द भी झगड़ालू है। मेरा विचार तो यह है कि नये अर्थके लिअे नया शब्द लेना ही ठीक है। 'ट्रस्टीशिप' शब्दका अर्थ विनोबा द्वारा सुझाये गये 'विश्वस्तवृत्ति' शब्दमें बहुत सही अुतरा है। वर्णव्यवस्थासे गांधीजीका जो आशय था, अुसे प्रगट करनेके लिअे मुझे 'वृत्तिव्यवस्था' शब्दका अुपयोग जंचता है। अपनी 'जीवनशोधन' पुस्तकमें मैंने 'रिलीजन' के लिअे 'अनुगम' और अुसके अनुयायीके लिअे 'अनुगामी' शब्दोंका व्यवहार किया है। 'सेक्युलर स्टेट' के लिअे भी मुझे लगता है कि हमें बिलकुल नया शब्द बनाना चाहिये; अुदाहरणके लिअे 'अविशेष अनुगामी' जैसा नकारात्मक या 'व्यापक धर्मी' जैसा विधायक शब्द हो, तो ठीक होगा।

बेशक, जो लोग भारतको सनातन हिन्दूधर्मकी पताका अुड़ाते देखना चाहते हैं, अुन्हें अिससे सन्तोष नहीं होगा। लेकिन तब विरोध स्पष्ट हो जायगा, शब्दोंसे होनेवाला भ्रम अुसमें नहीं रहेगा।

वर्धा, ४-१२-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

गांधीजीके चित्रका दुरुपयोग

हावड़ाके अेक भाअीने मेरे पास अुस शहरकी स्थानीय कांग्रेसके द्वारा प्रकाशित दो चुनावपत्रक भेजे हैं। दोनों पर गांधीजीकी वह बहु-परिचित तस्वीर है, जिसमें वे दोनों हाथ जोड़कर खड़े हुअे हैं। साथ ही चुनाव पेटीका चित्र भी है, जिस पर बैल-जोड़ीवाला कांग्रेसका चुनाव-चिन्ह है। संकेत यह है कि गांधीजी दोनों हाथ जोड़कर जनतासे कांग्रेसको ही मत देनेकी अपील कर रहे हैं।

अिसे चुनाव जीतनेके लिअे गांधीजीके नामके दुरुपयोगके बिलकुल ही अभद्र प्रयत्नके सिवा और क्या माना जाय? यह बात भी अुतनी ही बुरी है, जितनी कि कुछ व्यापारियोंका गांधीछाप बीड़ियां या दूसरा कोअी माल बेचना।

मुझे लगता है कि गांधीजीके चित्रोंके अिस दुरुपयोग पर सरकारको प्रतिबंध लगाना चाहिये, और विभिन्न राजनीतिक दलोंको भी स्वेच्छासे अपने अनुयायियोंको अिसी आशयकी सूचनाअें भेज देनी चाहियें।

वर्धा, ११-१२-'५१ कि० घ० म०
(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
खुलासा	कि० घ० मशरूवाला	३६९
सवाल-जवाब	कि० घ० मशरूवाला	३६९
विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा: १०	दा० मूं०	३७०
मतदाताओंके नाम अपील	देशराज	३७२
सेक्युलर या धार्मिक?	विनोबा	३७३
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा—८	दा० मूं०	३७४
झगड़ालू शब्द	कि० घ० मशरूवाला	३७६
टिप्पणियां:		
दुविधामें पड़े हुओंसे	श्रीराम शर्मा	३७१
गांधीजीके चित्रका दुरुपयोग	कि० घ० म०	३७६

www.vinoba.in